UG SEMESTER : IV
MJC-06: WESTERN ETHICS
TOPIC - नैतिक मापदण्ड के रूप में सुखवाद

Dr. Akanksha
Assistant Professor
Department of Philosophy
H.D Jain College, Ara
Veer Kunwar Singh University, Ara, Bihar – 802301
Dated – 25.02.2025

आचारशास्त्र में मानव आचरण के मूल्यांकन हेतु विभिन्न नैतिक मापदण्ड का उल्लेख किया गया है, जिसमें सुखवाद भी एक. है। सुखवाद एक ऐसा ही नैतिक मापदण्ड विषयक सिद्धान्त है, जिसके अनुसार मानव आचरण के मूल्यांकन का एकमात्र मापदण्ड सुख है। सुखवाद का अँग्रेजी में Hedonism कहा जाता है। इस शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द Hedone से है, जिसका अर्थ है-सुख। अतः सुखवाद नैतिक मापदण्ड का वह सिद्धान्त है, जिसके अनुसार सुख प्राप्ति ही जीवन का चरमलक्ष्य है। प्राचीन काल से आज तक सुखवाद के अनेक समर्थक हुए। सुखवाद के समर्थकों की जा रही है। जमवका या सिरेनैक्स, एपिक्यूरियन्स, शैफ्ट्सबरी, हचिसन, हॉब्स, ह्यूम, हैं। भारत में वेदों और उपनिषदों में सुखवादी सिद्धान्त यत्र-तत्र दीख पड़ते हैं। संख्या लगातार बढ़ती वेन्यम,

मिल आदि वृहस्पति और चार्वाक सुखवाद के प्रमुख समर्थकों में से हैं। चार्वाक की यह उक्ति सर्वविदित है कि, 'जब तक जीओ, सुख से जीओ और ऋण लेकर भी घी पीओ !

सुखबाद, नैतिकता का एक मापदण्ड प्रस्तुत करता है। मनुष्य के अन्दर भावना और बुद्धि दो तत्त्व पाये जाते हैं। सुखवाद भावना को बुद्धि की अपेक्षा श्रेष्ठतर मानता है। बुद्धि तो भावनाओं को तृप्त करने का एक साधन मात्र है। भावनाएँ स्वतः शुभ हैं। इनका आन्तरिक मूल्य है। प्रत्येक कर्म के मूल में कोई न कोई इच्छा विद्यमान रहती है। यदि इच्छा की पूर्ति हो जाती है तो हमें सुखानुभूति होती है। यदि इच्छा की पूर्ति नहीं होती तो दुःखानुभूति होती है। इसलिए, इच्छाओं की तृप्ति ही जीवन का चरम आदर्श बन जाती है। यही कारण है कि सुखवादी आचारशास्त्र को वासनाप्रधान आचारशास्त्र कहा जाता है।

स्वभावतः मनुष्य सुख की प्राप्ति तथा दुःख से छुटकारा पाना चाहता. है। प्रत्येक व्यक्ति का अंतिम लक्ष्य सुख ही प्राप्ति है। जिस कार्य से हमें सुख की प्राप्ति होती है वह अच्छा कर्म है तथा जो कार्य दुःख देने वाला होता है वही बुरा कर्म है। सुखवाद के दो प्रमुख रूप हैं- **(i) मनोवैज्ञानिक सुखवाद (ii) नैतिक सुखवाद**।

मनोवैज्ञानिक सुखवाद

मनोवैज्ञानिक सुखवाद, सुखवाद का वह रूप है जिसके अनुसार सुख की प्राप्ति ही प्रत्येक मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति सुख के लिए ही कर्म करता है। मनुष्य की इच्छाएँ

अनंत हैं, सब के मूल में एक ही लक्ष्य है-सुख की प्राप्ति। प्रत्येक व्यक्ति सामान्यतः सुख की प्राप्ति हेतु ही कार्य करता है। छात्र परिश्रम से पढ़ता है ताकि उसका परीक्षाफल अच्छा हो और उसे अच्छी नौकरी मिले और फलस्वरूप जिन्दगी में उसे सुख मिले। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का अंतिम लक्ष्य सुख की प्राप्ति ही है। मनोवैज्ञानिक सुखवाद 'है' या 'होगा' पर बल देना है। इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य सदैव सुख की कामना करता है। मनुष्य की इच्छाओं की तृप्ति सुख की प्राप्ति है। इच्छा किसी अभाव की सूचक है। अभाव में, हमें कष्ट होता है। इच्छा की पूर्ति से हमारा अभाव दूर होता है तथा सुखानुभूति होती है। हम अपने अनुभव के आधार पर इसे सत्य पाते हैं। इसे अन्तर्निरीक्षण द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है।

मनोवैज्ञानिक सुखवाद के अनेक समर्थक हुए जिसमें प्राचीन ग्रीस में सिरेनैक, आधुनिक युग में ह्यूम, बेन्यम, मिल आदि प्रमुख हैं। बेन्थम का कथन है कि 'प्रकृति ने मनुष्य कों सुख और दुःख के साम्राज्य में रखा है। उसका एकमात्र लक्ष्य सुख की प्राप्ति और दुःख का निवारण है।' मिल ने भी इस संदर्भ में कहा है कि, 'किसी वस्तु की इच्छा करना और उसे सुखप्रद समझना, उससे भागना और उसे कष्टप्रद समझना एक ही तथ्य के दो रूप हैं।' इस प्रकार, मनोवैज्ञानिक सुखवाद भी नैतिकता का एक मापदण्ड है। लेकिन, मनोवैज्ञानिक सुखवाद को एक संतोषप्रद सिद्धान्त के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

मनोवैज्ञानिक सुखयाद में विरोधाभास पाया जाता है। जितना ही सुख पाना चाहते हैं, उतना ही वह हमसे दूर खिसकता जाता है। इसलिए सुख पाने

का एकमात्र उपाय है, इसे भूल जाना। सुख्ख छाया की तरह है। जितनी ही छाया को पकड़ने की कोशिश की जाती है, छाया उतनी ही दूर खिसकती जाती है। यही विरोधाभास है।

मनोवैज्ञानिक सुखवाद की यह अवधारणा गलत है कि मनुष्य सुख प्राप्ति के लिए ही कर्म करता है। ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं, जहाँ निःस्वार्थ व्यक्ति अपने कर्त्तव्य को कर्त्तव्य समझकर करता है। कर्म के पीछे सुख की प्राप्ति उनका ध्येय कभी नहीं रहा। जब कोई देशभक्त अपने देश की रक्षा के लिए जान की बाजी लगा देता है, तो उस देश भक्त का कर्म सुख प्राप्ति के लिए नहीं है। मनोवैज्ञानिक सुखवाद का सिद्धान्त अमनोवैज्ञानिक है। इस सिद्धान्त के अनुसार हम सुख की प्राप्ति के लिए ही कोई कर्म करते हैं। यह बात अमनोवैज्ञानिक है। मनुष्य कर्मों के द्वारा किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा करता है। यह बात दूसरी है कि इच्छित वस्तु की प्राप्ति के बाद सुख की अनुभूति होती है। जब हमें प्यास लगती है तो हम पानी की इच्छा करते हैं, न कि सुखानुभूति की। इस प्रकार, पहले हम किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा करते हैं और तब फल के रूप में सुख की अनुभूति होती है। किन्तु, मनोवैज्ञानिक सुखवाद इसी तथ्य को उलटकर रखता है कि सुखानुभूति के लिए ही हम किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा करते हैं। अतः मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से मनोवैज्ञानिक सुखवाद दोषपूर्ण है। इस प्रकार, मनोवैज्ञानिक सुखवाद का सिद्धान्त दोषपूर्ण है।

नैतिक सुखवाद

नैतिक सुखवाद के अनुसार सुख की प्राप्ति ही प्रत्येक मनुष्य के जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। मनोवैज्ञानिक सुखवाद 'होगा' (Must) पर जोर देता है तो नैतिक सुखवाद 'चाहिए' (ought) पर बल देता है। मनोवैज्ञानिक सुखवाद एक तथ्यात्मक कथन है जबकि नैतिक सुखवाद मूल्य विषयक एक सिद्धान्त है। मनोवैज्ञानिक सुखवाद और नैतिक सुखवाद में कोई संबंध नहीं है। मनोवैज्ञानिक सुखवाद के अनुसार, 'मनुष्य सदैव सुख की इच्छा करता है' और नैतिक सुखवाद के अनुसार, 'मनुष्य को सुख की इच्छा करनी चाहिए'। इन दोनों कथनों में कोई आवश्यक संबंध नहीं है। यदि मनुष्य सुख की इच्छा रखता ही है तो फिर उसे सुख की इच्छा रखना चाहिए, का कोई अर्थ नहीं है। जहाँ मनोवैज्ञानिक सुखवाद का अन्त निराशावाद में होता है वहाँ नैतिक सुखवाद का अन्त आशावाद में होता है। नैतिक सुखवाद का क्षेत्र केवल व्यक्तिगत दृष्टिकोण तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि वह एक मानववादी दृष्टिकोण को पल्लवित करता है।

स्पष्ट है कि नैतिक सुखवाद के अनुसार मनुष्य के जीवन का लक्ष्य सुख की प्राप्ति ही होनौ चाहिए। परन्तु, प्रथम प्रश्न उठता है कि हमें किस प्रकार की सुख-प्राप्ति करनी चाहिए? अपने सुख की या दूसरों के सुख की? इस प्रश्न के उत्तरस्वरूप नैतिक सुखवाद के दो रूप हो जाते हैं-

(i) स्वार्थमूलक सुखवाद

(ii) परार्थमूलक सुखवाद

स्वार्थमूलक सुखवाद के अनुसार अपना ही सुख पाना व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए तथा परार्थमूलक सुखवाद के अनुसार दूसरों के लिए सुख प्राप्ति ही मनुष्य के जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।

अब एक दूसरा प्रश्न उठता है कि क्या सुखों के बीच गुणात्मक भेद है या नहीं है? क्या सभी प्रकार के सुख बराबर हैं? क्या एक कलाकार का सुख तथा एक शराबी का सुख बराबर है या गुणात्मक दृष्टिकोण से भेद है? गुणात्मक दृष्टिकोण से सुखबाद के दो रूप हो जाते हैं-

(i) निकृष्ट सुखवाद

(ii) उत्कृष्ट सुखवाद

निकृष्ट सुखवाद के अनुसार सुखों में गुणात्मक भेद नहीं है, बल्कि सभी प्रकार के सुख गुण के दृष्टिकोण से बराबर हैं। जबकि उत्कृष्ट सुखवाद मानता है कि सुखों में गुणात्मक भेद हैं। कुछ उच्च कोटि के हैं तो कुछ सुख निम्न कोटि के हैं। जैसे कलाकार का सुख शराबी के सुख से श्रेष्ठ है। उपर्युक्त दोनों प्रश्नों को एक साथ विचार करने पर नैतिक सुखवाद के चार रूप हो जाते हैं।

(i) निकृष्ट स्वार्थमूलक सुखवाद (Gross Egoistic Hedonism) इसके अनुसार, किसी प्रकार का सुख पाना ही व्यक्ति के जीवन का आदर्श होना चाहिए। यह स्वार्थमूलक सुख पर बल देता है तथा सुखों के बीच गुणात्मक भेद को स्वीकार नहीं करता।

(ii) उत्कृष्ट स्वार्थमूलक सुखवाद (Refined Egoistic Hedonism) इसके अनुसार, व्यक्ति को अपना सुख तथा उच्च कोटि

का सुख पाना ही जीवन का आदर्श होना चाहिए। अर्थात्, स्वार्थ सुख के साथ-साथ सुखों के बीच गुणात्मक भेद को स्वीकार किया गया है।

(iii) निकृष्ट परार्थमूलक सुखवाद या निकृष्ट उपयोगितावाद (Gross Altruistic Hedonism or Gross Utilitarianism): इसके अनुसार परार्थसुख और किसी प्रकार का सुख पाना जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। अर्थात यहाँ सुखों के बीच गुणात्मक भेद को अस्वीकार किया गया है तथा परार्थ सुख ही जीवन का आदर्श माना गया है।

(iv) उत्कृष्ट परार्थमूलक सुखवाद या उत्कृष्ट उपयोगितावाद (Refined Altruistic Hedonism or Refined Utilitarianism): इसके अनुसार व्यक्ति को पराया सुख तथा उच्च कोटि का सुख पाना जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। अर्थात् परार्थसुख के साथ-साथ सुखों के बीच गुणात्मक भेद को स्वीकार किया गया है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सुखवाद एक ऐसा नैतिक मापदण्ड विषयक सिद्धान्त है जिसके अनुसार मानव आचरण के मूल्यांकन का एकमात्र मापदण्ड सुख है। लेकिन सुख को नैतिक मापदण्ड मानकर केवल भाव-पक्ष पर बल दिया गया है। मानव स्वभाव के बौद्धिक, सौन्दर्यशास्त्रीय, धार्मिक आदि पहलुओं की घोर उपेक्षा की गयी है। फलतः सुखवादी सिद्धान्त संतोषजनक प्रतीत नहीं होता है।